



## Sri Basava Seva Samiti(R) Ilkal SRI BASAVA PUBLIC SCHOOL, ILKAL

8 हिंदी वसंत

# क्या निराश हुआ जाए

प्रश्न 1: लेखक ने स्वीकार किया है कि उन्हें भी लोगों ने धोखा दिया है फिर भी वे निराश नहीं हैं। आपके विचार से इस बात का क्या कारण हो सकता है?

उत्तर: जीवन में जरूरी नहीं कि हर बात आपके अनुकूल हो। अच्छाइयां और बुराइयां जीवन के सिक्के के दो पहलू की तरह हैं। लेखक धोखा खाने के बाद भी निराश नहीं हुआ है। इसकी वजह है लेखक का जीवन के प्रति सकारात्मक रुख। यदि हम निरर्थक बातों पर ज्यादा ध्यान देते हैं तो उससे हमारी नकारात्मक मानसिकता को बढ़ावा मिलता है। इससे हमारे अंदर दुख और हताशा की भावना भर जाती है। यदि हम जीवन की सार्थकताओं की तरफ ज्यादा ध्यान देते हैं तो इससे हमें जीवन को एक चुनौती की तरह जीने की प्रेरणा मिलती है। लेखक भी सकारात्मक मानसिकता से ओत प्रोत लग रहा है।

प्रश्न 2: लेखक ने अपने जीवन की दो घटनाओं में रेलवे टिकट बाबू और बस कंडक्टर की अच्छाई और इमानदारी की बात बताई है। इन घटनाओं से आप क्या निष्कर्ष निकालते हैं?

उत्तर: लेखक के जीवन की इन दो घटनाओं से इस बात की सीख मिलती है कि अभी भी कुछ लोग ऐसे बचे हुए हैं जो अच्छे आचरण का अनुसरण करते हैं। हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में ऐसी कई घटनाएँ होती हैं जिसमें हम इमानदारी की झलक देख सकते हैं। उदाहरण के लिए आपके साथ कभी न कभी ऐसा हुआ होगा कि किसी दुकानदार ने छुट्टे देते समय जरूरत से ज्यादा पैसे दिए हों और आपने उसे उसकी गलती का अहसास दिलाया होगा। इससे दुकानदार के मन में आपके लिए श्रद्धा के अलाव और कुछ नहीं पैदा हो सकती है।

प्रश्न 3: आजकल के बहुत सारे समाचारपत्र और समाचार चैनल दोषों का पर्दाफाश कर रहे हैं। इनकी सार्थकता पर अपने विचार प्रगट कीजिए।

उत्तर: केबल चैनल के इस आधुनिक युग में स्टिंग ऑपरेशन का फैशन हो गया है। हर चैनल अपनी लोकप्रियता बढ़ाने के चक्कर में स्टिंग ऑपरेशन की फिराक में रहते हैं। कई बार इससे सही अपराधी पकड़ में आते हैं। लेकिन ज्यादातर समय निर्दोष

लोगों को ही बलि का बकरा बनना पड़ता है।

अभी कुछ दिनों पहले दिल्ली के एक स्कूल की अध्यापिका को किसी चैनल वाले ने बदनाम किया था। बाद में उनका आरोप गलत साबित हुआ। समस्या ये है कि लोग नकारात्मक खबर को तो बड़े चाव से पढ़ते हैं, लेकिन सकारात्मक खबर की तरफ किसी का ध्यान नहीं जाता है। शिक्षिका की बदनामी के समाचार तो मुख्य पृष्ठ पर छपे थे लेकिन उनकी सही स्थिति की खबर अंदर के पन्नों पर कहीं गुमनामी में खो गई।

इससे समाज में उनकी इज्जत की क्या हालत हुई होगी इसकी कल्पना मात्र से मन सिहर उठता है।

### पर्दाफाश

**प्रश्न 1.** दोषों का पर्दाफाश करना कब बुरा रूप ले सकता है?

**उत्तर**—दोषों का पर्दाफाश करना तब बुरा रूप लेता है जब गलत लोगों के दोषों को उभारा जाए तो वे उग्र रूप ले लें या समाज में आतंक फैला दें।

**प्रश्न 2.** आजकल के बहुत से समाचार पत्र या समाचार चैनल 'दोषों का पर्दाफाश' कर रहे हैं। इस प्रकार समाचारों और कार्यक्रमों की सार्थकता पर तर्क सहित विचार लिखिए?

**उत्तर**—आजकल बहुत से समाचार पत्र व समाचार चैनल 'दोषों का पर्दाफाश' कर रहे हैं। इसका कारण यह है कि लोग ऐसे समाचारों को पढ़कर या देखकर सचेत हो जाएँ और अपने आस-पास के माहौल में ऐसा न होने दें। इन कार्यक्रमों से लोगों को साहस और शक्ति मिलती है। वर्तमान में टी.वी. के समाचार चैनल 'आजतक' में प्रत्येक समाचार को विस्तार से दिखाया जाता है जिससे लोगों को अपने आसपास के वातावरण में घटने वाली घटनाओं के बारे में जानकारी रहती है। दूसरी ओर घरेलू व कानून संबंधी कार्यक्रम भी समाज की सच्चाई का प्रदर्शन करते हैं। इस क्षेत्र में समाचार पत्र भी अपनी विशेष भूमिका निभाते हैं।

### कारण बताइए

निम्नलिखित के संभावित परिणाम क्या-क्या हो सकते हैं? आपस में चर्चा कीजिए, जैसे—“ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है।” परिणाम—भ्रष्टाचार बढ़ेगा।

1. “सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है।” .....

**उत्तर**—सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है—तानाशाही बढ़ेगी।

2. “झूठ और फरेब का रोजगार करनेवाले फल-फूल रहे हैं।” .....

**उत्तर**—झूठ और फरेब का रोजगार करनेवाले फल-फूल रहे हैं—भ्रष्टाचार बढ़ेगा।

3. “हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम।” .....

**उत्तर**—‘हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम’—अविश्वास बढ़ेगा।